चंचल मन निसदिन भटकत ह,
भटकत ह भटकावत ह ,।।
चंचल मन निशदिन भटकत ह ।

ज्यु मरघट तनु ऊपर चढ़कर ,
डाल डाल पे लटकत ह ।।
चंचल मन निशिदिन भटकत ह ।

रूक्त जतन से छण विषयन से,
फिर भी नही ये अटकत ।।
चंचल मन निशदिन भटकत ह

कांच हिरे से लोभ करे मुर्ख,
चिंतामणि को पटकत ह ।।
चंचल मन निशिदिन ह ,

ब्रह्मा नन्द समीप छोड़कर,
तुछ विषयन रस गटकत ह ।।
चंचल मन निशदिन भटकत ह ।
भटकत ह भटकावत ,
चंचल मन निशदिन भटकत ह ।।

बोल नाथ जी महाराज की ~जय हो
बोल शंकर भगवान की ~जय हो